P: ISSN NO.: 2394-0344
E: ISSN NO.: 2455-0817
Remarking
Vol-II * Issue-VII* December- 2015

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में शिक्षा सामाजशास्त्र का उपयोग व आवश्यकता

लोकेन्द्र बहादुर सिंह
प्रवक्ता,
बी0एड0 विभाग,
एम.एस.डी. सिंह पी.जी. कालेज,
मोहम्मदाबाद, फर्रूखाबाद

सारांश

शिक्षा और ज्ञान दानो ही समाज सापेक्ष वस्तुएँ है, समाज के अभाव में अर्जित नही की जा सकती। व्यक्ति और समाज, दोनो ही एक दूसरे पर प्रतिक्रिया करते है और प्रभाव डालते है। समाज विज्ञान एक ऐसा विषय है जो इस प्रतिक्रिया का अध्ययन करता है समाज विज्ञान के प्रथम प्रवर्तक थे–आगस्त कॉम्टे।

इस विज्ञान के अन्य प्रमुख्य प्रवत्तका में आते है हर्वट स्पेन्सर, डंकन, मैकारइवर इत्यादि समाज विज्ञान के अध्ययन के विषय में कहा जा सकता है कि यह सम्पूर्ण मानव संस्कृति का अध्ययन करता ह। समाज में हर प्रकार के मानव सम्बन्धों का अध्ययन ही समाज विज्ञान के अध्ययन का विषय है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में शिक्षा समाज विज्ञान का उपयोग बहुत बढ गया है क्योकि अब इसकी आवश्यकता पर बल दिया जाने लगा है। क्याकि समाज में आज भटकाव की स्थिति पनप रही है सामाजिक सम्बन्ध बिखर रहे है, मनष्य–सम्बन्ध मशीन मानव बनता चला जा रहा है जहाँ पर मानव मूल्यों का कोई बोध नही रह गया है। छात्र अनुशासनहोनता को अपना अस्त्र बनाने में लगे है वे असामाजिक कार्य कर अपने को श्रेष्ठ मानते है। आज इस बात की महत्वपूर्ण आवश्यकता है कि मूल्यों को फिर जिन्दा किया जाये, यह कार्य शिक्षा समाज विज्ञान द्वारा ही सम्भव है।

मुख्य शब्द : अनुशासनहीनता, न्यूक्लियर फैमिली, मानवता, आभासी, अनैतिकता, दफन।

प्रस्तावना

व्यक्ति जब जन्म लेता है तो वह बिल्कुल ज्ञान शून्य होता है उसमे जो चेतना तथा अन्य क्रियाये होती है वे अन्तर्निहित होती है। बालक अपने आप बहुत कम सीख सकता है। उसे सीखने के लिये किसी की आवश्यकता होती है। व्यक्ति को बिना पुस्तक तथा बिना शिक्षक छोड दिया जाये तो वह बिल्कुल भी न सीख पायेगा, उसका जीवन जन्तुओ जैसा ही रहेगा। अतः शिक्षा के लिये जीवन दूसरे व्यक्तियों का होना और पुस्तकों के रूप मे उसके ज्ञान का संचित होना परम आवश्यक है। शिक्षा को इस रूप में ही सामाजिक क्रिया कहा जाता है। वस्तुतः शिक्षा और ज्ञान, दोना ही समाज–सापेक्ष वस्तुएँ है जो उनके अभाव में अर्जित नही की जा सकती।

अनेक विद्वानो ने शिक्षा–समाजशास्त्र पर अपने मत प्रस्तुत किये है उन्हाने समाज के अस्तित्व पर बहुत जोर डाला है। डॉ0 राधाकृष्णन ने अपने पुस्तक 'इण्डियन फिलासफी' में लिखा है 'चिन्तनशील मस्तिष्क के फलने–फूलने के लिये कला एवं विज्ञान में वृद्धि होने के लिये, जो पहली दशा आवश्यक है, वह है–एक संघर्षहीन समाज जो सुरक्षा एवं अवकाश प्रदान करने वाला हो' क्याकि शिक्षित होने के लिये हमे शिक्षित समाज की आवश्यकता है वे आगे कहते है 'एक सम्पन्न संस्कृति का होना असम्भव है यदि समाज बंजारो की भाँति है जहाँ व्यक्ति जीवन के लिये संघर्ष करते हो और कष्ट पूर्ण मृत्यु प्राप्त करते हो।'

समाज विज्ञान की परिकल्पना

'सोशियोलॉजी' शब्द का प्रयोग फ्रंच दार्शनिक आगस्ट कामटे ने 1837 ई0 में कई बार अपने व्याख्याना म किया। समाज विज्ञान से उनका तात्पय वैज्ञानिक विधियों का उपयोग मानव तथा समाज के सम्बन्ध के अध्ययन में करना था। उन्हाने इस विज्ञान को शुद्ध ज्ञान की संज्ञा दी, क्याकि इसका अध्ययन परम आवश्यक है जो कि विधिपूर्ण अनुसंधानो द्वारा हो सकता है। समाज विज्ञान के विकास में हर्वट स्पेन्सर की पुस्तक 'प्रिन्सिपल ऑफ सोशियोलॉजी' का महत्वपूर्ण योगदान है, जो उन्होने 1876 में लिखी थी समाज विज्ञान एक

वैज्ञानिक तथा वस्तुनिष्ठ विषय है इस बात को मैकाइवर, डन्कन एलरिज इत्यादि विद्वानो ने स्वीकार किया है।

समाज विज्ञान क्या है? और इसका उद्देश्य क्या है? यह प्रश्न महत्वपूर्ण है इसका उत्तर पाये बगैर हम समाज विज्ञान की परिकल्पना कैसे कर सकते है वस्तुतः समाज विज्ञान सामाजिक प्रक्रिया से सम्बन्ध रखता है। यह समूह का अध्ययन करता है यह हर उस वस्तु का अध्ययन करता है जो मानव व्यवहार पर कुछ न कुछ असर डालता है आधुनिक शिक्षा प्रणाली को हम तभी और अच्छा बना पायेगें जब हम उसके ग्राहक और दाता दोनो का अध्ययन कर पायगे। यह सम्पूर्ण संस्कृति, रीति रिवाज, परम्पराआ, लोक कथाआ, लोक–ज्ञान, धामिक–सामाजिक संस्थाओं, लोक–हित, जातियो का वर्गीकरण, आर्थिक समस्याओं, भौगोलिक परिस्थितियों का प्रभाव, अपराध, मानव उद्विकास, चारित्रिक उत्थान–पतन आदि समस्याओं का अध्ययन करता है।

कोल और मूर के अनुसार 'सामाजिक विज्ञान समाज के बहुमुखी व्यवहार का अध्ययन करता है' आज हम अपने चारित्रिक विकास को उन्नति की ओर ले जाना है क्योकि आधुनिकता ने चारित्रिक विकास पर विराम चिन्ह लगा दिया है। आज हमारे युवा विद्वानो का आदर कम करने लगे है और अश्लीलता, हिंसा, नशा, तस्करी, आतंकवाद आदि में लिप्त हो रहे है। जिससे सामाजिक माहौल खराब हो रहा है। बगैर सामाजिक विज्ञान के अध्ययन के इस लक्ष्य को पाना आसान नही है।

शिक्षा और समाज विज्ञान का रिश्ता

शिक्षा और समाज विज्ञान का घनिष्ठ सम्बन्ध है यह समाज विज्ञान के उद्देश्यों की वैज्ञानिक क्रिया द्वारा, जो व्यक्ति तथा समाज के मध्य होती है प्राप्त करने की चेष्ठा करता है। शिक्षा समाज विज्ञान के इस महान प्रगति का श्रेय जॉन डीवी तथा पेयन महोदय को है। 'दि प्रिन्सिपल्स ऑफ एजूकेशन सोशियोलॉजी' नामक पुस्तक में पेयन महोदय ने सामूहिक जीवन में शिक्षा का प्रभाव तथा शिक्षा पर सामूहिक जीवन के प्रभाव के सम्बन्ध में प्रकश डाला उन्होने सामाजिक प्रक्रिया के ज्ञान को शिक्षा द्वारा अध्ययन करना सामाजिक प्रगति का एक आवश्यक अंग माना। उन्हाने पतिपादित किया कि शिक्षा का मूल उद्देश्य व्यक्तित्व का सर्वागीण विकास, तभी सफलता पूर्वक प्राप्त किया जा सकता है। जब व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास सामाजिक वातावरण के प्रति व्यक्ति की प्रतिक्रिया पर ही आधारित हो। जॉन डीवी महादय ने भी सामाजिक प्रवृत्तियों का शिक्षा में बहुत महत्वपूर्ण स्थान माना। उन्हाने अपनी पुस्तका 'दि स्कूल एण्ड सोसाइटी' तथा 'डेमोक्रसी एण्ड एजूकेशन' द्वारा शिक्षा में व्यक्ति की सामाजिकता के महत्व पर प्रकाश डाला उन्होने कहा कि व्यक्ति द्वारा जाति की सामाजिक चेतनाओ में भाग लेने से शिक्षा का पूर्ण विकास होता है तात्पर्य यह कि शिक्षा की क्रिया एक सामाजिक प्रक्रिया है।

हमारे देश के शैक्षिक संगठन प्राचीन काल से लेकर आज तक सामाजिक भावना से पूर्ण रहे है। गुरूकुल सामाजिकता और पारिवारिक एहसास का एक जीता जागता उदाहरण है। शिक्षा के उद्देश्यों में व्यक्तिगत तथा सामाजिक उत्थान एक परम उद्देश्य माना गया है। कत्तव्य को महान महत्ता प्रदान करते भारत के ऋषियों ने सामाज सेवा की भावना भारतीयों के नश–नश मे भर दी थी। परन्तु दासता के दौर मे भारतीय समाज की पूर्ण अवहेलना की गयी जहाँ के नागरिकों पर ऐसी शिक्षा प्रणाली थोपी गयी जिसका आधार पाश्चात्य सामाजिक जीवन था। फलस्वरूप शिक्षा प्रणाली दोषा से पूर्ण हो गई। स्वतन्त्रता के पश्चात अब इस बात की चेष्टाएँ की जा रही है कि शिक्षा प्रणाली में सुधार हो उसकी जड़े भारतीय समाज के सुन्दर आर्दश, नियम परमपराओं इत्यादि पर ही रखी हो। अतएव वर्तमान काल में समाज विज्ञान का प्रभाव भारतीय शिक्षा पर शीघता से बढ रहा है। इसी कारण शिक्षक और शिक्षार्थी दोना ही शिक्षा समाज विज्ञान से पर्णरूपेण अवगत है।

अब तक हमने शिक्षा समाज विज्ञान पर ऐतिहासिक दृष्टिकोण से विचार किया। समाज विज्ञान की तरह शिक्षा समाज विज्ञान का मूल मंत्र भी सामाजिक प्रक्रिया का अध्ययन करना है ब्राउन महोदय के अनुसार 'सब शिक्षा व्यक्ति की जाति की सामाजिक चेतना में भाग लेने के द्वारा संचालित होती है।' शिक्षा समाज विज्ञान समाज के भिन्न अंगो की व्यक्ति के साथ होने वाली प्रतिक्रिया का अध्ययन कर शिक्षा में उसके महत्व पर प्रकाश डालता है। यह विज्ञान समाज की उन्नति को शिक्षा के माध्यम द्वारा प्राप्त करने पर बल देता है।

शिक्षा समाज विज्ञान का उपयोग

यह समाज विज्ञान का ही अंग है इसका उपयोग अन्य विषयों के साथ भी है हमे देखना है कि हमारे सामाजिक संस्थाना का विकास किस प्रकार हो बालक के ऊपर समाज के तत्वो का सकारात्मक प्रभाव पड वे समाज से अच्छी बाते ग्रहण करे और समाज को निर्मल बनाने में सहयोग करें। आज हमारे विद्यालयों में अनुशासनहीनता, उद्डता, अनैतिकता तथा मूल्य हास को देखते है। विद्यार्थी मूल्या को कोई महत्व नही दे पा रहे है। उन्हे आधुनिक शिक्षा प्रणाली ने मूल्यों के प्रति संवेदनहीन बना दिया है हम ऐसे समाज का निर्माण कर रहे है जहाँ केवल मनुष्य मशीन के समान कार्य और व्यवहार करने में लगा है। लोगो को अपने पड़ोस के लोगो का हाल नही पता है पर सोशल साइटो पर मित्र बनाते फिर रहे है। इसके मूल में क्या भावना दफन है हम क्या पाना चहाते है क्यो हमे अपने परिवार, पास पडोस और समाज का कोई ख्याल नही है लेकिन दूर अन्य स्थानो से हम लोगो को खोज रहे है। इस अन्धी खोज म हम भावनाओं को मार रहे है और आभासी भावनाये व्यक्त कर रहे है। हम अपने आपसे ही दूर जा रहे है आज हम भटके पथिक की तरह अम्बर में भटक रहे है लेकिन इस भटकाव का एक ही रास्ता है वो है शिक्षा में समाज विज्ञान का उपयोग हमे अपने आप को अन्य तमाम विषयों से सीखना होगा शिक्षा समाज शास्त्र हमे विभिन्न विषयो के माध्यम से सीखने का अवसर प्रदान करता है। हम इतिहास से अनेका बाते सीख सकते है इतिहास उन सामाजिक शक्तियों का अध्ययन पुरातन काल से आज अर्वाचीन काल तक करता है जो सामाजिक परिर्वतन में बहुत बडा योग देती रही है। इतिहास का ज्ञान शिक्षा समाज विज्ञान को सामाजिक शक्तियों उनकी प्रकृति एवं स्वरूप तथा उनको कार्य प्रणाली से सम्बन्ध में सूझ प्रदान करता है।

इसी प्रकार मनोविज्ञान मानव जीवन तथा व्यवहार का अध्ययन करता है वंशानुक्रम तथा वातावरण

का प्राणी के जीवन पर जो प्रभाव पडता है, मनोविज्ञान उसका विवेचन तथा विश्लेषण करता है। शिक्षा समाज विज्ञान द्वारा सीखने की क्रिया में सामाजिक तत्वो के स्थान एवं ग्रहण का अध्ययन किया जाता है। दोना ही विषय बालक के व्यक्तित्व के विकास पर प्रभाव डालते है। मनोविज्ञान का दृष्टि कोण व्यक्ति के चेतन तथा अचेतन मन के विकास पर बल देकर व्यक्तित्व को समझना होता है। जब कि समाज विज्ञान सामाजिक दृष्टिकोण से व्यक्तित्व के विकास पर प्रकाश डालता है। वास्तव में यदि व्यापक दृष्टिकोण से देखा जाय तो मनोविज्ञान तथा शिक्षा समाजविज्ञान के दृष्टिकोण में कोई विशेष अन्तर नही दिखाई पडगा क्योकि दोनो ही विषया के अध्ययन का विषय मानव है। आधुनिक शिक्षा मनोविज्ञान सामाजिक वातावरण जो परिवार विद्यालय और समाज में पाया जाता है का अध्ययन करता है। आज हमे एक ऐसे समाज का निर्माण करना है जो पूर्ण सहिष्णु हो जिसमें मानव–मानव के काम आ सके बजुर्गो का सम्मान हो सबको कार्य मिले कोई भी भटकाव के रास्ते पर न चले यह कार्य सिर्फ शिक्षा समाज विज्ञान के माध्यम से किया जा सकता है।

शिक्षा समाज विज्ञान की आवश्यकता

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में शिक्षा समाज विज्ञान की परम आवश्यकता है इस समय समाज में अनेक बदलाव बहुत तेजी से आ रहे है। आर्थिक विकास सामाजिक बदलाव में बहुत प्रभाव डाल रहा है। समाज में ग्लोबलाइजेशन का भी प्रभाव तेजी से पड़ रहा है, हम नित नये बदलाओं का अनुभव कर रहे है परिवारा में भी बिखराव उत्पन्न हो चुके है। न्यूक्लियर फेमिली आज के दौर में तेजी से स्थान बना रही है। इससे एक तरफ क्षणिक सुख और आनन्द प्रतीत होता है लेकिन दूर कही इसका प्रभाव तनाव और अकेले पन को जन्म दे रहा है। जिससे व्यक्ति नशे की तरफ भाग रहा है। नशे के उपरान्त व्यक्ति आत्महत्या तथा अनेको असामाजिक कार्य करने लगा है। आज संचार उपकरण भी व्यक्ति को एकांकी बना रहे ह लोग अकेले घण्टा मोबाइल तथा लैपटॉप पर समय व्यतीत करत पाये जाते ह तेजी से बीमारियों का दौर प्रारम्भ है लोग शारीरिक मेहनत से दूर मानसिक काया में लगें है जिससे डायबटीज, उच्चरक्तचाप, अनिद्रा जैसी बीमारियां बढो है ये बीमारियां आज समाज में आम है जो शिक्षित वर्ग कहाँ जा रहा है हमे लगता है वो सबसे ज्यादा भावना शून्य हो रहा है।

निष्कर्ष

आज आवश्यकता इस बात की है कि लोग जागरूक हो और समस्याओं का सामना करे यह सब कार्य शिक्षा समाज विज्ञान के द्वारा ही सम्भव है। आज हमे शिक्षा प्रणाली को इस कदर सजाना होगा जिससे तकनीकी शिक्षा, डाक्टरी शिक्षा तथा सूचना तकनीकी के छात्र भी मानव मूल्यों तथा समाज विज्ञान और पर्यावरण विज्ञान का अध्ययन कर पूर्ण मानव बने अन्यथा इस आर्थिक दौड़ में मानवता पीछे छूट जायेगी जहाँ हम सब एक दूसरे के ऊपर गिर कर एक मानव ढेर में बदल जायेगे और सभी सामाजिक रिश्ते हमेशा के लिये समाप्त होते चले जायगे।

संन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. 'इण्डियन फिलासफी' डा0 राधा कृष्णन।
2. 'प्रिन्सिपल्स ऑफ सोशियोलॉजी' हर्बट स्पेन्सर।
3. 'दि प्रिन्सिपिल्स ऑफ एजूकेशन सोशियोलॉजी' पेयन महोदय।
4. 'दि स्कूल एण्ड सोसाइटी' जॉन डीवी।
5. 'डेमोक्रसी एण्ड ऐजूकेशन' जॉन डीवी।
6. 'दि साइन्टफिट फंक्सन ऑफ दि सोशियोलॉजी ऑफ ऐजूकेशन' फ्लोरियन जेननीसकी।
7. 'ए सोशियोलॉजी ऑफ ऐजूकेशन' ब्रूक ओवर एण्ड गोटलिब।
8. डॉ0 एस0एस0 माथुर।